# खण्ड 1:
# परमेश्वर की असीमितता

**परमेश्वर में हमारा विश्वास स्वयं परमेश्वर द्वारा अपने बारे में बताने से आया है, किसी मनुष्य द्वारा उसके बारे में बताने से नहीं।**

सोचने के लिए हम चित्रों या शब्दों पर विचार करते हैं। इसका कोई महत्व नहीं है कि हमारे मन में क्या आता है, क्योंकि चित्र और शब्द दोनों ही उस बात के प्रतीक हैं जिसे समझाने या समझने की हम कोशिश कर रहे होते हैं। दैनिक जीवन में इसका काफ़ी महत्व है। परन्तु, किसी ऐसी वस्तु की व्याख्या करने की कोशिश साधारण नहीं होती इसमें हमें अक्सर कठिनाई होती है। कितनी ही बार हम कहते हैं, ''पता तो है, परन्तु मैं बता नहीं सकता''? स्थिति उस समय और भी जटिल हो जाती है जब हम किसी ऐसी वस्तु से व्यवहार कर रहे होते हैं जो असाधारण और इतनी व्यापक होती है कि हमें डर रहता है कि कहीं हम इससे टाल-मटोल तो नहीं कर रहे हैं।

परमेश्वर के बारे में बात करना इसीलिए कठिन है। जब तक हम सामान्य बातचीत अर्थात दैनिक अनुभवों और पारिवारिक शब्दों से बाहर नहीं निकलते तब तक हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं। जैसे-जैसे हमारे विचार विस्तृत होते जाते हैं, हमें बड़े और ज्यादा व्यापक शब्दों का इस्तेमाल करना आवश्यक लगता है। इससे परमेश्वर के बारे में चर्चा अधिक प्रभावशाली तथा ''थियोलोजिकल'' बन जाती है। हम अपने आपको एक अजीब भूखण्ड में पाते हैं। इससे एक कड़वी-मीठी दुविधा पनप सकती है अर्थात हो सकता है कि बातें तो बहुत हों परन्तु उनमें से समझ कम ही आएं।

इस समय हमारी दिलचस्पी का विषय बाइबल की यह मान्यता है कि परमेश्वर उपस्थिति, ज्ञान तथा शक्ति में असीमित है। नि:संदेह, इससे परमेश्वर के अस्तित्व को माना जाता है। सृष्टि की रचना के वृत्तांत, उत्पत्ति की पुस्तक में परमेश्वर के अस्तित्व या उसकी वास्तविकता का तर्क देने में अधिक समय नहीं लगाया गया अर्थात इसे संक्षिप्त रूप से

''आदि में *परमेश्वर*...'' (उत्पत्ति 1:1) ही बताया गया। इस दृष्टिकोण का अर्थ यह है कि बाइबल मुख्यत: परमेश्वर की पुष्टि करती है, न कि उसके लिए कोई आग्रह या बचाव। आरम्भिक बिन्दु के रूप में परमेश्वर के अस्तित्व का तथ्य प्रस्तुत कर बाइबल के लेखक उसके स्वभाव पर चर्चा करने के लिए स्वतन्त्र थे।

उसके स्वभाव का मूल उसका अस्तित्व है। मूसा ने इस बात को जलती हुई झाड़ी में पाया जब परमेश्वर ने उसे इस्राएलियों को यह कहने का निर्देश दिया, ''जिसका नाम **मैं हूं** है, उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है'' (निर्गमन 3:14ख)। परमेश्वर के इस परिचय की पहले किसी को जानकारी नहीं थी (निर्गमन 6:2, 3)। अपने आप में अस्तित्व रखने वाला यह परमेश्वर बाइबल के लेखकों के पास अपनी असीमित उपस्थिति, ज्ञान तथा सामर्थ में प्रकट हुआ था (भजन 139:1-12; यिर्मयाह 32:17; मरकुस 10:27)। इसलिए, हम अब इन तीन गुणों पर चर्चा करेंगे।